मार्च 2025, अंक 03, वर्ष -02

सिनेमाहौल

फ़िल्म ईज़ीन

cinemahaul

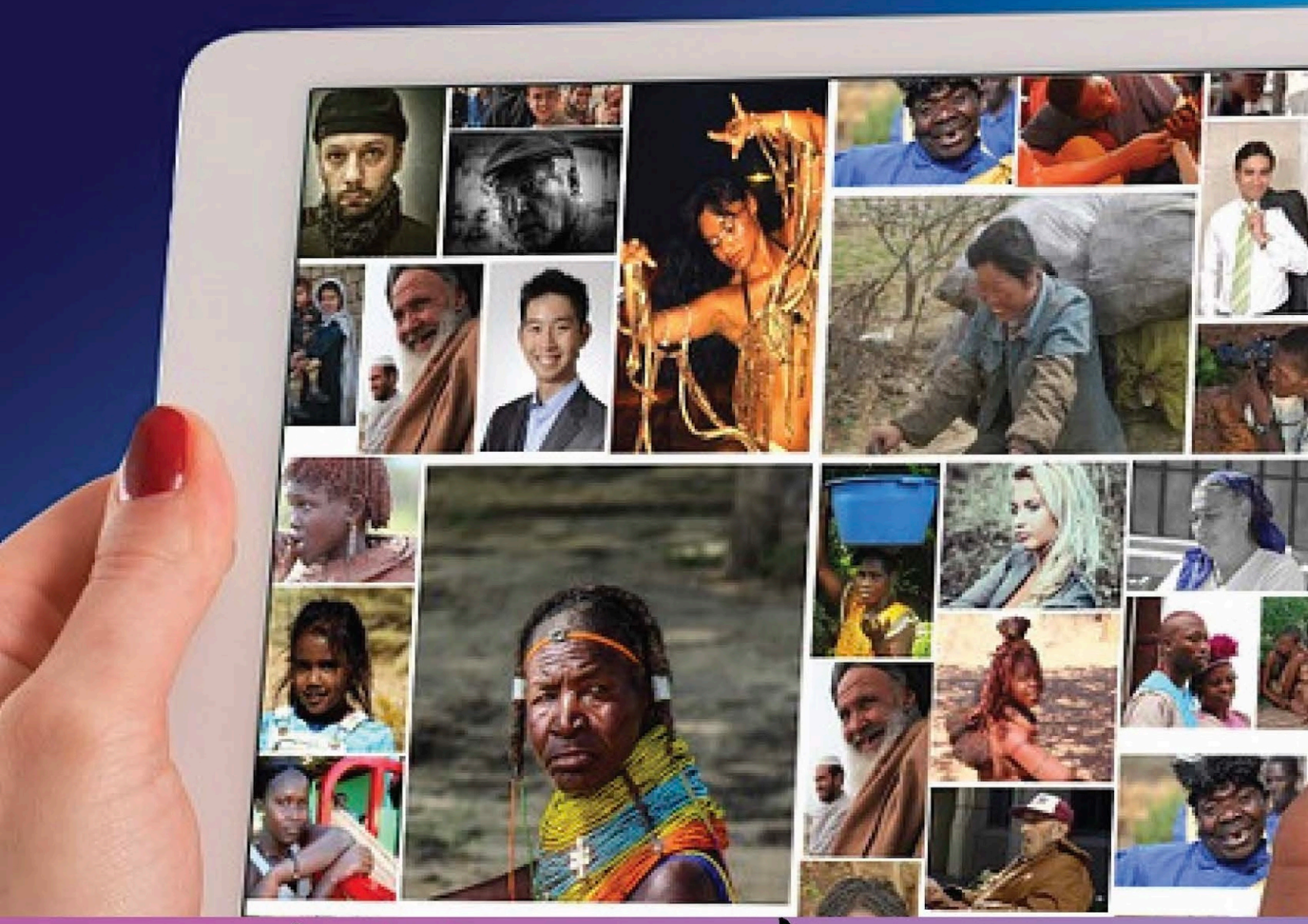

ओटीटी ला रहा है बदलाव

संकलन और संपादन

अजय ब्रह्मात्मज

इकबाल रिजवी, गीताश्री, चेतन कश्यप, जयराज, जवरीमल्ल पारख, कविता, झरना लखनवी, दिलीप कुमार पाठक, डॉ प्रकाश हिंदुस्तानी, डॉ रक्षा गीता, फ़रीद ख़ाँ, यूनुस खान, विश्वजीत मुखर्जी, शशि सिंह, संजीव श्रीवास्तव, सूर्यन मौर्य, अविनाश दास

आवरण: आर चक

मार्च 2025

वर्ष 2 अंक 3

सिनेमाहौल

फ़िल्म ईज़ीन

संकलन और संपादन

अजय ब्रह्मात्मज

आवरण विषय: ओटीटी ला रहा है बदलाव

कवर : रविराज पटेल

अनुक्रम

मेरी बात 4

बदल गया सिनेमा देखने का तरीका 8

इक़बाल रिज़वी

हथेली पर मनोरंजन का माध्यम 14

गीताश्री

तीसरी कसम, कालीचाट, ट्वेल्थ फेल 23

चेतन कश्यप

आवरण विषय के सारे पहलू 36

जयराज

ओटीटी : मीडिया का लोकतांत्रिक मंच 92

जवरीमल्ल पारख

दिलों को लुभा रहा दक्षिण भारतीय सिनेमा 106

झरना लखनवी

अश्लीलता के चरम पर ओटीटी 116

दिलीप कुमार पाठक

सिंगल स्क्रीन सिनेमाघर की वो यादें 122

डॉ प्रकाश हिन्दुस्तानी

ओटीटी प्लेटफ़ॉर्म पर सवार : क्षेत्रीय सिनेमा का विस्तार 125

डॉ रक्षा गीता

यह स्टारडम का अंतिम दौर है 143

फ़रीद ख़ाँ

मल्टीप्लेक्स ने बदल दिया है फ़िल्मों का संसार 148

यूनुस ख़ान

ओटीटी और सिनेमा 156

विश्वजीत मुखर्जी

तकनीकी बदलाव : सिनेमा बनाने और देखने के तरीकों पर उसका प्रभाव 160

शशि सिंह

अब सिनेमा जादू नहीं जगाता 183

संजीव श्रीवास्तव

मनोरंजन का ताजा माध्यम है ओटीटी 187

अजय ब्रह्मात्मज

प्रेम का एक अलग रूप: अँग्रेज़ी फिल्म 'लैम्ब' में प्रेम का चित्रण 198

सूर्यन मौर्य

इन गलियों में 206

कविता

बेतरतीब बॉलीवुड फरवरी 2025 220

मेरी बात

सिनेमाहौल फ़िल्म ईज़ीन के मार्च अंक के आवरण विषय पर सोचते समय यह विचार उभरा कि पिछले कुछ सालों में फिल्म देखने के तौर-तरीके में आ रहे हैं बदलाव की चर्चा की जाए। इसी उद्देश्य से लेखकों की सुविधा के लिए हमने इस विषय के कुछ पहलू सुझाए थे।

1. *फिल्में देखने में ग्लोबलाइजेशन और डिजिटल के बढ़ते प्रभाव का क्या असर पड़ा है?*
2. *क्या मल्टीप्लेक्स के आने की वजह से फिल्म देखने के तरीके बदल गए हैं?*
3. *सिंगल स्क्रीन के लगातार कम होने से फिल्म देखने का तरीका बदला है*
4. *हिंदी फिल्मों के विस्तार और क्षरण के बारे में क्या राय हैं?*
5. *स्ट्रीमिंग प्लेटफार्म के उभार से हिंदी फिल्मों के देखने पर क्या असर पड़ा है?*
6. *ओटीटी के फायदे और नुकसान क्या हैं?*
7. *फिल्म देखने के प्रीमियम फॉरमैट आईमैक्स, 3D और डॉल्बी का क्या असर हुआ है?*
8. *मूबी जैसे प्लेटफार्म से कलात्मक को बेहतरीन सिनेमा देखने की सुविधा बढ़ी है*
9. *दर्शकों के डिजिटल की तरफ झुकाव के कारण*

10. रील से मुकाबला है फिल्मों का

11. थिएटर पर यूट्यूब का असर

12. दक्षिण भारतीय फिल्मों का राष्ट्रीय प्रचार हिंदी दर्शकों को प्रभावित कर रहा है

13. युवा फिल्मकार फिल्म मेकिंग के भारतीय परंपरा से कट गए हैं। यही कारण है कि दर्शक उनसे छूटते जा रहे हैं।

ऊपर लिखे पहलुओं में से अधिकांश लेखकों ने ओटीटी को ही चुना। वास्तव में ओटीटी मनोरंजन जगत में एक परिघटना की तरह उपस्थित हुआ है। हम सभी इससे प्रभावित हुए हैं। फिल्में देखने के लिए प्लेटफार्म के तौर पर इसकी स्वीकृति तेजी से बढ़ी है। कुछ सालों पहले तक माना जा रहा था कि थिएटर की अग्रणी भूमिका बनी रहेगी। यह धारणा अब तक बनी हुई है। खासकर अनुभव, आनंद और आमदनी के मामले में ओटीटी अभी इसके समकक्ष नहीं आ सका है।

फिल्में देखने का सामुदायिक अनुभव विशेष होता है। फिल्में देखते हुए आपने भी महसूस किया होगा कि जब सिनेमाघर में बैठे सारे दर्शक पर्दे पर चल रहे हैं विभिन्न मनोभावों के दृश्यों से एक साथ प्रभावित होते हैं। समान प्रतिक्रिया करते हैं। किसी एक दर्शक की ताली संकेत मात्र होती है। भावनाओं का उफान इतना तीव्र रहता है कि पूरा सिनेमा घर तालियों की आवाज से गूंज उठता है। ऐसा ही कॉमिकल दृश्य में हंसी-

ठहाके के साथ होता है। गमगीन और अवसाद के दृश्यों में सभी अवसन्, उदास और अश्रुपूर्ण हो जाते हैं। व्यक्तित्व और स्वभाव के मुताबिक कोई सुबकता है, किसी का गला रुंध जाता है तो कोई फफक पड़ता है। इन दिनों रुमाल रखने का चलन कम हुआ है तो दर्शक उंगलियों और आस्तीनों का उपयोग करते हैं।

भारतीय परिवेश में ओटीटी विस्तार पा रहा। ओटीटी पर देश-विदेश की सीरीज, फ़िल्में और डॉक्यूमेंट्री हम देख रहे हैं। बतौर दर्शक हमारा भी विस्तार हो रहा है। यही कारण है कि अब थिएटर और ओटीटी पर आ रही औसत और घिसी-पिटी कहानियां पसंद नहीं आ रही है। कहीं ना कहीं हमारे सौंदर्यबोध, दृष्टिकोण और भावानुभूति में बदलाव आया है। इस बदलाव में ओटीटी ने उत्प्रेरक की भूमिका निभाई है। अब जरूरत है की ओटीटी के क्यूरेटर और प्रोग्रामिंग प्रभारी भारतीय परिवेश से प्रभावपूर्ण कहानियां का चुनाव करें। भारत के सांस्कृतिक और साहित्यिक विविधता को भी पर्दे ले आएं।

फिलहाल सृजन और मनोरंजन की दुनिया सहमी हुई है। एक अज्ञात और अप्रत्यक्ष अंकुश है। अघोषित रूप से बताया और समझाया जा रहा है कि आप क्या दिखा सकते हैं? स्पष्ट किया जा रहा है कि आप क्या नहीं दिखा सकते हैं? ना दिखाए जाने वाले पहलुओं की सूची लंबी होती जा रही है। इस वजह से मनोरंजन के विभिन्न माध्यमों में कार्यरत प्रतिभाएं संकुचित होने के साथ सिकुड़ती जा रही हैं।

एक संभावना खिलने के पहले ही मुरझा रही है। अंत में आप सभी लेखक मित्रों का आभारी हूं। आपके निरंतर सहयोग से सिनेमाहौल फ़िल्म ईज़ीन का सफर जारी है।

नॉटनल के नीलाभ श्रीवास्तव और गरिमा सिन्हा को धन्यवाद! उनका सहयोग मेरा संबल है।

फ़िल्में देखें, फिल्में पढ़ें और फ़िल्मों पर लिखें

अजय ब्रह्मात्मज

मार्च 2025